20 साल बाद लौटेगा छम्मा-छम्मा, एली अवराम लेंगी उर्मिला की जगह

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

पुराने गानों को नए अंदाज में पेश करने का ट्रेंड लगातार जोर पकड़ रहा है. करीब चार में से एक फिल्म ऐसी होती है जिसमें किसी ना किसी पुराने गाने को नई तरह से परोस कर पेश कर दिया जाता है. इसी कड़ी में अब उर्मिला मातोंडकर के एक गाने के साथ एक्सपेरिमेंट किया जा रहा है. खबर है कि उर्मिला के हिट सॉन्ग छम्मा-छम्मा को रीक्रिएट करने की तैयारियां चल रही हैं.

साल 1998 में आई फिल्म चाइना गेट के इस गाने को अरशद वारसी की फिल्म फ्रॉड सइयां के लिए तैयार किया जाएगा. इस बार इस गाने में उर्मिला मातोंडकर की जगह एली अवराम नजर आएंगी.

एली के लिए ये टास्क काफी मुश्किल होने वाला है क्योंकि इस गाने में उर्मिला ने कमाल का काम किया था. खासतौर पर 90 के दशक में बड़े हुए दर्शकों और उर्मिला फैन्स के लिए इस गाने से काफी यादें जुड़ी होंगी.

फ्रॉड सइयां के लिए इस गाने की कंपोजिशन तनिष्क बागची करने वाले हैं. वहीं रोमी, अरुण और नेहा कक्कड़ इसे गाने वाले हैं. साथ ही रैप का तड़का भी लगाया जाएगा. इसकी जिम्मेदारी रैपर इक्का पर है. गाने की कोरियोग्राफी आदिल शेख करने वाले हैं. गाने की शूटिंग भी जल्द शुरू हो रही है.

इस गाने को लेकर एक्साइटेड एली ने कहा, मुझे यह गाना बेहद पसंद है और खासतौर पर उर्मिला मातोंडकर. जब मुझे इस गाने के लिए अप्रोच किया गया तो मैं सातवें आसमान पर थी. यह एक एपिक नंबर है और मुझे उम्मीद है कि मैं इसके साथ इंसाफ कर पाउंगी.

घर, काम, तैमूर और पापा सैफ को बहुत अच्छे से मैनेज करती हैं करीना: सारा अली खान

सारा अली खान ने अपनी फिल्म केदारनाथ के ट्रेलर लॉन्च के दौरान कहा था कि वह करीना कपूर खान के प्रफेशनलिज्म की मुरीद हैं, यह बात वह उनसे सीखती भी हैं। इन दिनों सारा अपनी फिल्म केदारनाथ के प्रमोशन में बिजी हैं। फिल्म के प्रमोशन के दौरान एक बातचीत में सारा ने करीना की तारीफ करते हुए और भी बहुत सी बातें बताईं।

करीना की तरह अच्छी मां होना और प्रफेशनल करियर को आगे बढ़ाना आसान नहीं है

करीना की तारीफ में सारा कहती हैं, करीना बहुत ज्यादा प्रफेशनल तो हैं ही, इसके अलावा वह घर को बेहद खूबसूरती के साथ कुशलता पूर्वक मैनेज करती हैं। वह (करीना) भाई तैमूर और मेरे पिता को पूरा समय देती हैं और यही उनकी सबसे खूबसूरत बात है। अच्छी मां और साथ में अपने प्रफेशनल करियर को बेहतरीन ढंग से आगे बढ़ाना आसान नहीं है, यही सब बातें हैं, जिसकी वजह से मैं उनकी सराहना करती हूं और सीखती भी हूं।

पापा की यह बात बिल्कुल झूठ है, वह मेरी हर बात जानते हैं

हाल ही में अपनी फिल्म बाजार के प्रमोशन के दौरान सैफ अली खान ने कहा था कि वह सारा के दोस्त कभी नहीं हो सकते है, क्योंकि उनके अंदर पिता वाली फीलिंग है। अपने पापा सैफ के इस बयान को सिरे से नकारती सारा ने कहा, पापा की यह बात बिल्कुल झूठ है, वह मेरी हर बात जानते हैं, एक दोस्त की तरह उन्हें मेरी जिंदगी की 90 प्रतिशत बातें पता होती हैं।

हां, वह थोड़े पिताजी जैसे भी हैं, इसलिए थोड़ा लिहाज करना पड़ता है

सारा आगे कहती हैं, हां, वह थोड़े पिताजी जैसे भी हैं, इसलिए थोड़ा बहुत तो लिहाज करना पड़ता है, अब पिताजी को सब कुछ तो नहीं बता सकते हैं। मेरे ख्याल से हम बहुत ज्यादा क्लोज हैं, वह (सैफ) मेरे लिए दोस्त की तरह ही हैं। उनके साथ मेरा ऐज गैप भी बहुत ज्यादा नहीं है, इसलिए भी हम एक-दूसरे से अच्छी तरह कनेक्ट कर पाते हैं। सारा इन दिनों अपनी रिलीज़ के लिए तैयार फिल्म केदारनाथ के प्रमोशन में जुटी हैं। सुशांत सिंह राजपूत और सारा अली खान स्टारर केदारनाथ को काई पो चे और रॉक ऑन बनाने वाले निर्देशक अभिषेक कपूर ने निर्देशित किया है। यह फिल्म 7 दिसंबर को देश भर के सिनेमाघरों में रिलीज़ होगी।

मुझे सही सलाह देने वाले नहीं मिले: प्रीति झंगियानी

मोहब्बतें फेम प्रीति झंगियानी को बॉलिवुड में एक लंबा अरसा हो गया है। प्रीति जल्द ही देखो ये है मुंबई फिल्म में नजर आने वाली हैं। प्रीति मानती हैं कि करियर की शुरुआत में फिल्मों के चयन में उनसे भूल हुई थी, यही वजह है उनकी ज्यादातर फिल्में सक्सेसफुल नहीं रहीं। हालांकि उन्हें इस बात की खुशी है कि वह आज भी अपने करियर में सक्रिय हैं। उनसे हुई एक खास बातचीत:

आपकी फिल्म देखो ये है मुंबई 6 साल पहले रिलीज होने वाली थी। आज के सेटअप पर कितनी फिट बैठेगी?

देखिए, मैं इस पर यही कहना चाहूंगी कि अगर फिल्म को एक प्रॉपर रिलीज न मिले तो इंतजार करना ही बेहतर होता है। हमारी चाहत तो यही है कि यह फिल्म जितनी ज्यादा ऑडियंस तक पहुंचे तो उतना बेहतर हो। रही बात आज के सेटअप पर फिल्म के फिट होने की तो मैं यह कह सकती हूं कि आज के समय के लिए भी यह प्रासंगिक होगी। फिल्म एक ऐसी लड़की की कहानी है, जो अमीर है और बॉलिवुड में अपना करियर बनाना चाहती है। हम सभी जानते हैं कि बॉलिवुड में आने के लिए केवल पैसे ही काफी नहीं होते हैं। इस कहानी को कॉमिक अंदाज में पिरोया गया है। यह एंटरटेनिंग फिल्म है, लोग इसे देखने के बाद एक मुस्कान लेकर घर वापसी करेंगे। मैंने आजतक इस तरह का रोल कभी नहीं किया है।

आप मानती हैं कि करियर की शुरुआत में फिल्मों के सिलेक्शन को लेकर गलतियां हुई थीं?

यह सवाल मुझे हर बार पूछा जाता है कि मोहब्बतें की ग्रेट सक्सेस के बावजूद आपका करियर उस लेवल तक क्यों नहीं पहुंचा। हो सकता है कि फिल्मों के सिलेक्शन के वक्त मुझसे भूल हुई है। उस वक्त मेरे पास सही सुझाव देने वाले सही लोग नहीं थे। हम कितना भी कुछ बोल लें लेकिन हम सभी जानते हैं कि हर इंसान की अपनी एक डेस्टिनी होती है। मैं तब से आजतक काम करती ही जा रही हूं। मुझे कभी नहीं लगा था कि मैं कहीं भी रुकी हूं। शादी और बच्चों के बाद भी मैं काम में लगातार सक्रिय हूं। मैंने खुद को किसी भाषा में बांधकर नहीं रखा। मैं बंगाली, पंजाबी, राजस्थानी हर भाषा में फिल्में कर चुकी हूं। फिलहाल भी दो-तीन फिल्मों से जुड़ी हूं। मैंने कभी काम करना बंद नहीं किया है। आप इसे नॉन सक्सेसफुल करियर तो कह नहीं सकते। मोहब्बतें की बाद भी मैंने कई सारी फिल्में की थीं लेकिन दुर्भाग्यवश फिल्में नहीं चलीं जैसे एलओसी, आन, अनर्थ। चूंकि मैं फिल्मी बैकग्राउंड से नहीं थी तो शायद फिल्म सक्सेस के नजरिये से मेरे सिलेक्शन में कमी रह गई थी।

प्रवीण अपनी अलग तरह की फिल्मों के लिए पहचाने जाते हैं। एक ऐक्टर पति होने का क्या फायदा मानती हैं?

मैंने अपने करियर की शुरूआत 16 साल से की थी। उस वक्त मैं मॉडलिंग किया करती थी। फिल्मों में मेरा आना महज संयोग था। इसके बाद मैं लगातार काम करती रही और 27 साल तक उसी में बिजी रही। इस बीच प्रवीण से मुलाकात हुई और मुझे एहसास हुआ कि वह सबसे अलग हैं और मुझे समझते हैं। फिर मैंने सोचा कि अपनी जिंदगी को एक नई दिशा देने का वक्त आ गया है। रही बात ऐक्टर पति की तो मैं तो बस फायदा ही फायदा मानती हूं। ऐक्टर हज्बैंड आपके शेड्यूल और वर्क कमिटमेंट को अच्छे से समझते हैं। हम एक-दूसरे को समझते ज्यादा हैं और सपॉर्ट करते रहते हैं।

ज्यादातर ऐक्ट्रेस रीजनल फिल्में करने से हिचकिचाती हैं। आपने खुद को इसमें बांधकर नहीं रखा है?

नहीं, बिलकुल नहीं बांधती मैं। मुझे किसी भी भाषा में फिल्में करने से कोई परहेज नहीं है। मैं मानती हूं कि एक ऐक्टर को खुद को किसी भाषा में बांधना भी नहीं चाहिए।

बतौर प्रॉड्यूसर आप फिल्मों के बदलते दौर पर क्या कहना चाहेंगी?

देखिए, अब इंटरनेट ने बहुत से मौके खोल दिए हैं। अब एक मीडियम नहीं रहा है। साथ ही हमारी ऑडियंस भी बाहरी चीजों से वाकिफ हुई है। ऐसे में अब आप उन्हें बेवकूफ नहीं बना सकते हैं। अगर आप उनके सामने बकवास कहानी परगानों का तड़का लगाकर परोस दें तो नहीं चलेगी। कॉन्टेंट भी दमदार होना चाहिए।

मीटू मूवमेंट पर आपकी क्या राय है?

मुझे नहीं पता इसपर क्या कॉमेंट करूं। मेरी जर्नी बहुत अलग रही है लेकिन मैं जब इन लड़कियों की कहानी पढ़ती हूं तो मुझे गुस्सा आता है। इस चीज का बाहर आना इंडस्ट्री के लिए सही भी है। क्योंकि जो माइंडसेट रहा है यहां का और औरतों को हैरस किया गया है उस पर लगाम लगेगी। यह सचाई है कि इंडस्ट्री में ऐसा होता है, बहुत सी औरतें जो स्ट्रॉन्ग रही हैं और उन्होंने आवाज भी उठाई थी लेकिन नतीजतन उनसे फिल्में छीन ली जाती थी। इसलिए मैं मानती हूं कि यह सही समय है। बहुत हिम्मत चाहिए अपनी कहानी बताने में, हमें उन्हें सुनना चाहिए और सपॉर्ट भी करना चाहिए। ऐसे में बहुत सी औरतों को साहस मिलेगा और वे आगे आकर अपनी कहानियां कहेंगी। अगर पावरफुल आदमियों के नाम बाहर नहीं आएंगे तो फिर यह मूवमेंट आगे नहीं बढ़ पाएगा।